# अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ

## 1. दृष्टि (Vision)

- भारतीय एवं वैश्विक परिवेश में हिन्दी को अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न भाषा बनाकर इसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय अस्मिता के पहचान की भाषा बनाना।
- अनुवाद विज्ञान को अंतर अनुशासनिक ज्ञान के रूप में विकसित करते हुए इसे आधुनिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र से जोड़कर हिन्दी में विदेशी एवं भारतीय भाषाओं की यंत्रानुवाद प्रक्रिया का विकास करना।
- निर्वचन को आशु–अनुवाद की परिधि से फैलाकर एक स्वतंत्र ज्ञानानुशासन के रूप में विकसित करना।
- विशेष रूप से निर्वचन के माध्यम से भारतीय संस्कृति एवं डायस्पोरा के विविध पक्षों पर शोध करना।
- अनुवाद अनुशासन को भाषा शिक्षण आदि के प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित करना।
- अन्तर प्रतीकात्मक अनुवाद का कम्प्यूटर, सिनेमा, दूरदर्शन, आकाशवाणी आदि क्षेत्रों में विकास करना।
- अनुवाद को वर्तमान सांस्कृतिक एवं सामाजिक तथा प्रयोगपरक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष का विकास करना।
- भारतीय एवं पाश्चात्य श्रेष्ठ साहित्य का हिन्दी में अनुवाद करना तथा हिन्दी में अनूदित कृतियों का समीक्षा, परीक्षण एवं मूल्यांकन कर अनुवाद की गुणवत्ता में वृद्धि करना।
- हिन्दी तथा आशु अनुवादकों का प्रशिक्षण तथा समय–समय पर इनके कौशल के विकास के लिए विशेष दक्षता के साथ उपयुक्त प्रशिक्षण, ओरिएंटेशन, कार्यशाला एवं पुनश्चर्या (Refresher) कार्यक्रमों को आयोजित करना।
- अनुवाद के विभिन्न कोशों का निर्माण करना।

## 2. मिशन

- छात्र–छात्राओं को अनुवाद के क्षेत्र में संस्थागत प्रशिक्षण प्रदान करके उन्हें कुशल अनुवादक के रूप में स्थापित होने में सहयोग प्रदान करना।
- अनुवाद के माध्यम से संस्कृतियों के मध्य आपसी समझ का विस्तार करना और प्रकारान्तर से राष्ट्रीय एकता और अंतरराष्ट्रीय बंधुत्व की भावना को बल देना।
- केंद्र एवं राज्य सरकार के कर्मचारियों एवं निजी क्षेत्रों के अनुवादकों/दुभाषियों को समय–समय पर प्रशिक्षित करने की व्यवस्था करना।

## 3. अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के अंतर्गत संचालित विभाग :

### 3.1 अनुवाद प्रौद्योगिकी विभाग

वैश्वीकरण से सारा संसार विश्वग्राम के रूप में उभर कर आया है। इस के कारण विभिन्न भाषा–भाषी समुदायों तथा ज्ञान क्षेत्रों में अनुवाद की महत्ता और सार्थकता में वृद्धि हुई है। अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में हो रहे अनुवाद चिंतन से अनुवाद सिद्धांत अपेक्षाकृत एक नए ज्ञान क्षेत्र के रूप में उभरा है। इसके कलात्मक स्वरूप के साथ–साथ वैज्ञानिक स्वरूप को भी स्पष्ट करने का प्रयास हो रहा है। इस के कारण अनुवाद ने एक बहुविधात्मक और अपेक्षाकृत स्वायत्त विषय के रूप में अपनी पहचान बना ली है। सामान्य अनुवाद को आशु अनुवाद की परिधि से बाहर लाकर मशीनी अनुवाद के सोपान तक लाने का प्रयास भी हो रहा है। वर्तमान स्थिति को दृष्टिगत रखते हुए विशेषज्ञों की खाई को दूर करने की दृष्टि से इस विश्वविद्यालय में अनुवाद विद्यापीठ का प्रारंभ किया गया। अतः अनुवाद के साथ निर्वचन को भी इसके अंतर्गत समाहीत किया गया है। इस अनुवाद विभाग के अंतर्गत स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारंभ किए गए है।

## 3.2 डायस्पोरा अध्ययन विभाग

**शोध एवं शैक्षणिक कार्यक्रम**

डायस्पोरा अध्ययन विभाग का गठन अन्तर–अनुशासनिक शोध एवं शैक्षणिक गतिविधियाँ संचालित करने के लिए किया गया है। इस विभाग में सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी अनुशासनों यथा समाजशास्त्र, मानवशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन आदि के संधि–क्षेत्र में डायस्पोरा से जुड़े विभिन्न मुद्दों का अनुशीलन किया जायेगा।

डायस्पोरा अध्ययन विभाग द्वारा शोधात्मक गतिविधियों के अंतर्गत भारतीय डायस्पोरा के ऐतिहासिक संदर्भ, उसकी सभ्यतागत धरोहर, सामाजिक एवं सांस्कृतिक निरंतरता एवं रूपान्तरण, मेजबान समाज के संदर्भ में उनका आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन, भारतीय स्वभूमि तथा भारतीय डायस्पोरा के बीच संप्रेषण एवं जुड़ाव को समृद्ध करने वाले तत्वों को सम्मिलित किया जायेगा।

विश्व संस्कृति में भारतीय डायस्पोरा एक महत्वपूर्ण और कुछ संदर्भो में विशिष्ट स्थान निर्मित कर रहा है। वर्तमान भारतीय डायस्पोरा का उद्भव अंग्रेजों द्वारा भारत में राजनैतिक प्रभुत्व स्थापित करने तथा उसे औपनिवेशिक शासन प्रणाली के हिस्से के रूप में अंगीकार करने से मुख्यतः जुड़ा हुआ है। उन्नीसवीं शताब्दी में अनुबंधित श्रमिकों के रूप में बड़े पैमाने पर भारतीयों को सुदूरवर्ती औपनिवेशिक बागान क्षेत्रों में ले जाया गया। इन्हीं परिस्थितियों में मारीशस, त्रिनिदाद, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका, फिजी, श्रीलंका गुयाना, मलेशिया एवं अन्य देशों में बसे भारतीय मूल के लोगों ने विविध गतिविधियों से एक विशिष्ट पहचान निर्मित की है।

डायस्पोरा अध्ययन विभाग द्वारा औपनिवेशिक युग से वर्तमान तक भारतीय डायस्पोरा के गठन तथा संचालन की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाएगा। विभाग के अध्ययन एवं शोध गतिविधि का केंद्र–बिंदु अनुबंध आधारित श्रम व्यवस्था से निर्मित भारतीय डायस्पोरा होगा।

**डायस्पोरा अध्ययन विभाग की शोध गतिविधियों एवं अध्ययन का उद्देश्य निम्नवत् हैः–**

मेजबान (होस्ट) समाजों में प्रवासन, अवस्थापन (बसाव) तथा पहचान निर्माण की प्रक्रियाएं।

प्रवासन तथा स्वभूमि (होमलैण्ड) : स्मृतियाँ, वृत्तान्त एवं मौखिक इतिहास।

मेजबान समाजों की गतिशील शक्ति–संरचना के संदर्भ में भारतीय डायस्पोरा समुदायों में

नृजातीय पहचान का उभार : एक समन्वयकारी अथवा विघटनकारी शक्ति के रूप में।

वैश्विक तथा राष्ट्रीय स्तर पर पहचान का संघर्ष एवं भारत में उभरती नृजातीय–चेतना के संदर्भ में भारतीय डायस्पोरा।

भारतीय डायस्पोरा समुदायों का आपसी जुड़ाव तथा पार–देशीय संजाल (ट्रांसनेशल नेटवर्क) तथा भारतीय स्वभूमि से उसका जुड़ाव।

मेजबान समाजों (होस्ट सोसाइटी) के सामाजिक, राजनैतिक, वैज्ञानिक–तकनीकी तथा औद्योगिक विकास में भारतीय डायस्पोरा का योगदान।

डायस्पोरा तथा भारतीय राज्य : संस्थाएं, अभिकरण एवं नीतियाँ।

भारतीय डायस्पोरा का नृजाति–विवरणात्मक अध्ययन।

भारतीय डायस्पोरा के बारे में भारतीय लेखकों, डायस्पोरा लेखकों एवं गैर भारतीय लेखकों द्वारा सृजित साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन तथा भारतीय डायस्पोरा में उभरते नवीन सांस्कृतिक स्वरूपों एवं लोकप्रिय संस्कृति संबंधी शोध।

## 4. अनुवाद प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम :

### 4.1 एम.ए. हिंदी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)

एम.ए. हिंदी (अनुवाद प्रौद्योगिकी) का दो वर्षीय नियमित पाठ्यक्रम चलाया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम चार छमाहियों में पूरा होता है। यह पाठ्यक्रम 64 क्रेडिट का है। इसके साथ ही कंप्यूटर का अध्ययन अनिवार्य है जो प्रत्येक छमाही में 2 क्रेडिट का है।

**योग्यता :**

किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भी अनुशासन में न्यूनतम 40 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातक (10+2+3 पाठ्यक्रम) परीक्षा उत्तीर्ण। (अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए 35 प्रतिशत)

**कुल सीटें : 28**

**पाठ्यक्रम शुल्क :**

| | | |
|---|---|---|
| प्रवेश शुल्क | : | 150 |
| छमाही शिक्षण शुल्क | : | 500 |
| सुरक्षा शुल्क (प्रत्यर्पणीय) | : | 250 |
| प्रयोगशाला शुल्क | : | 200 |
| पुस्तकालय शुल्क (वार्षिक) | : | 050 |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम / खेलकूद | : | 075 |
| परिचय पत्र शुल्क (वार्षिक) | : | 020 |
| इंटरनेट शुल्क (वार्षिक) | : | 200 |
| चिकित्सा शुल्क (वार्षिक) | : | 050 |
| **कुल** | : | **1495 रु.** |

### 4.2 एम.फिल. हिंदी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)

एम.फिल. हिंदी (अनुवाद प्रौद्योगिकी) पाठ्यक्रम एक वर्ष का होगा। पहली छमाही में नियमित कक्षाएँ होंगी व दूसरी छमाही में विद्यार्थी अपना लघु शोधप्रबन्ध पूरा करेंगे। कुल 22 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में 12 क्रेडिट के तीन प्रश्नपत्र होंगे और 8 क्रेडिट

का लघु शोधप्रबंध और 2 क्रेडिट की मौखिक परीक्षा होगी। इस पाठ्यक्रम में कुल 14 सिटें हैं।

**योग्यता :**

संबद्ध अनुशासन में किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। (अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)

**कुल सीटें : 14**

**पाठ्यक्रम शुल्क :**

| | | |
|---|---|---|
| प्रवेश शुल्क | : | 150 |
| छमाही शिक्षण शुल्क | : | 500 |
| सुरक्षा शुल्क (प्रत्यर्पणीय) | : | 250 |
| प्रयोगशाला शुल्क | : | 200 |
| पुस्तकालय शुल्क (वार्षिक) | : | 100 |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम / खेलकूद | : | 075 |
| परिचय पत्र शुल्क (वार्षिक) | : | 020 |
| इंटरनेट शुल्क (वार्षिक) | : | 200 |
| चिकित्सा शुल्क (वार्षिक) | : | 050 |
| **कुल** | : | **1545 रु.** |

## 4.3 पी–एच.डी. हिंदी (अनुवाद प्रौद्योगिकी)

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (एम.फिल. / पी–एच.डी. उपाधि के लिए न्यूनतम मानक एवं प्रक्रिया) विनियम, 2009 के अनुसार यह पाठ्यक्रम संचालित है।

**योग्यता :**

संबद्ध अनुशासन में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण। (अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए 50 प्रतिशत)

**सीटें रिक्तता के आधार पर**

**पाठ्यक्रम शुल्क :**

| | | |
|---|---|---|
| पंजीकरण शुल्क | : | 300 |
| प्रयोगशाला शुल्क | : | 1000 |
| पुस्तकालय शुल्क (वार्षिक) | : | 300 |
| सुरक्षा राशि (प्रत्यर्पणीय, सिर्फ प्रवेश के समय) | : | 1000 |
| परीक्षा शुल्क (शोध प्रस्तुति के समय) | : | 1000 |
| चिकित्सा शुल्क (वार्षिक) | : | 050 |
| इंटरनेट शुल्क (वार्षिक) | : | 500 |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम / खेलकूद | : | 075 |
| परिचय पत्र शुल्क (वार्षिक) | : | 020 |
| **कुल** | : | **4245 रु.** |

4.4 **अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा (हिंदी अनुवाद)**
एक वर्षीय (दो छमाही) का **(अंशकालीन)** पाठ्यक्रम

**योग्यता :**
मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय की स्नातक उपाधि तथा हिंदी एवं अंग्रेजी का कार्य साधक ज्ञान।

**कुल सीटें : 28**

**पाठ्यक्रम शुल्क :**

| | | |
|---|---|---|
| प्रवेश शुल्क | : | 200 |
| शिक्षण शुल्क (प्रति छमाही) | : | 750 |
| इंटरनेट शुल्क | : | 000 |
| प्रयोगशाला शुल्क | : | 000 |
| परीक्षा शुल्क (प्रति छमाही) | : | 250 |
| सुरक्षा शुल्क (प्रत्यर्पणीय) | : | 250 |
| पुस्तकालय शुल्क (वार्षिक) | : | 050 |
| चिकित्सा शुल्क (वार्षिक) | : | 050 |
| परिचय पत्र शुल्क | : | 020 |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम/खेलकूद | : | 075 |
| **कुल** | : | **1645 रु.** |

## 5. डायस्पोरा अध्ययन विभाग के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रम :

5.1 **एम.फिल. प्रवासन, डायस्पोरा तथा ट्रांसनेशनल–सांस्कृतिक अध्ययन प्राठ्यक्रम**
यह पाठ्यक्रम एक वर्ष का होगा। पहली छमाही में नियमित कक्षाएँ होंगी व दूसरी छमाही में विद्यार्थी अपना लघु शोधप्रबंध पूरा करेंगे। कुल 22 क्रेडिट के इस पाठ्यक्रम में 12 क्रेडिट के तीन प्रश्नपत्र होंगे और 8 क्रेडिट का लघु शोधप्रबंध और 2 क्रेडिट की मौखिक परीक्षा होगी।
**योग्यता :**
मनविकी अथवा सामाजिक विज्ञान की किसी शाखा/अनुशासन में न्यूनतम 55 प्रतिशत अंकों के साथ (अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजाति के लिए 50 प्रतिशत) स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण।

**कुल सीटें : 05**

**पाठ्यक्रम शुल्क :**

| | | |
|---|---|---|
| प्रवेश शुल्क | : | 150 |
| छमाही शिक्षण शुल्क | : | 800 |
| सुरक्षा शुल्क (प्रत्यर्पणीय) | : | 1000 |
| प्रयोगशाला शुल्क | : | 000 |

| | | |
|---|---|---|
| पुस्तकालय शुल्क (वार्षिक) | : | 100 |
| सांस्कृतिक कार्यक्रम/खेलकूद | : | 075 |
| परिचय पत्र शुल्क (वार्षिक) | : | 020 |
| इंटरनेट शुल्क (वार्षिक) | : | 200 |
| चिकित्सा शुल्क (वार्षिक) | : | 050 |
| **कुल** | : | **2395 रु.** |

# 6. भावी योजना

## 6.1 उद्देश्य एवं कार्यकलाप (**Objectives & Functions**)

- अनुवाद से संबंधित साफ्टवेयरों का संकलन एवं प्रतिस्थापन।
- अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में भारतीय भाषाओं से संबंधित सी–डैक द्वारा निर्मित भाषा–साफ्टवेयर के द्वारा अन्य भारतीय भाषाओं के उपकरणों की जानकारी एवं परिचय।
- मशीन अनुवाद को दृष्टिगत रखते हुए मशीनी अनुवाद की गुणवत्ता का मूल्यांकन एवं परीक्षण।
- समय–समय पर मशीनी एवं अनुवाद विषय से संबंधित विषय–विशेषज्ञों को आमंत्रित कर परामर्श एवं मार्गदर्शन।
- अनुवाद पाठ्यक्रम से संबंधित विशेष रूप से अभिविन्यास कार्यक्रम/कार्यशाला का आयोजन।
- हिंदी के प्रयोजनमूलक क्षेत्रों आदि अनुप्रयुक्त पक्षों पर परिचर्चा करना।
- संकाय सदस्यों के ज्ञानात्मक एवं कौशल निर्माण हेतु प्रशिक्षण शिविरों में सहभागिता।
    - स्नातकोत्तर डिप्लोमा एक वर्ष (दो सत्र)
    - ज्ञान प्रौद्योगिकी एवं अनुवाद
    - सिनेमेटिक अनुवाद (डबिंग और सबटाइटलिंग)
    - पर्यटन एवं अनुवाद
    - निर्वचन अनुवाद
    - मशीनी अनुवाद

## 6.2 अनुवाद में पर्यटन अध्ययन

वर्तमान समय में राष्ट्रीय एवं अन्तरराष्ट्रीय परिदृश्य में पर्यटन उद्योग का तीव्रगति से विकास हो रहा है। इस क्षेत्र में रोजगार की प्रबल संभावनाएँ बढ़ती जा रही हैं। महात्मा गांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं निर्वचन के द्वारा प्रभावी सम्प्रेषण विदेशी भाषाओं में दक्षता और व्यक्तित्व विकास के माध्यम से इस क्षेत्र में नई पहल करना चाहता है। जिसके अंतर्गत अनुवाद में पर्यटन अध्ययन की आवश्यकता को देखते हुए भावी योजना के रूप में कार्यान्वित किया जा सकता है।

## 6.3 प्रयोगशाला एवं स्टूडियो

- निर्वचन पर आधारित भाषा प्रयोगशाला
- ज्ञान प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला
- सिनेमेटिक अनुवाद स्टूडियो
- मशीनी अनुवाद प्रयोगशाला
- विभागीय ग्रंथालय का विस्तार

## 7. अनुवाद एवं निर्वचन विद्यापीठ के संकाय सदस्य

- प्रो. ए. अरविंदाक्षन – प्रति–कुलपति एवं संकायाध्यक्ष
- डॉ. अन्नपूर्णा सी – विभागाध्यक्ष, शैक्षणिक योग्यता : पी–एच.डी.
- डॉ. अनवर अहमद सिद्दीकी – सहायक प्रोफेसर, शैक्षणिक योग्यता : पी–एच.डी.
- डॉ. राम प्रकाश यादव – सहायक प्रोफेसर, शैक्षणिक योग्यता : पी–एच.डी.
- डॉ. राजीव रंजन राय – सहायक प्रोफेसर, शैक्षणिक योग्यता : पी–एच.डी.